Center of enlightment

Jeevak Ayurved Medical College
& Hospital Research Center

Jeevak Ayurved Medical College & Hospital, Research Centre

VAADMARGA
AND IT'S USE IN MANAGEMENT

GUIDED BY:

Dr. Sunil Kumar Gautam
Dr. A.K. Dubey
Dr. Avinash
Dr. Sushil Kumar

PRESENTED BY:

Shashwati Shreya
Sakshi Pandey
Batch: 2021-22

CONTENTS

- Introduction
- Materials and methods
- Results
- Discussion
- Conclusion

INTRODUCTION

- The Adhyaya entitled "Rogabhishakjitiya Adhyaya" of Charaka Samhita, Vimana sthana is exclusively devoted to methodological issues of life science, introduces the most Significant and an appropriate Learning Methodology for the Bhishak of all the times, i.e. "Trividha Gyanopayas" :
  1. Adhyayana
  2. Adhyapana and
  3. Tatvida Sambhasha

- Here the Tadvida Sambhasha is stated of Sandhaya Sambhasha and the Vigrihya Sambhasha.
- The Vigrihya Sambhasha is mentioned as the theoretical disputations (differences in ideologies) which can only be resolved by arguments (vada-Prativadas) in the debates conducted under some specified norms (vaadamaryada) and some specified methods (vadamarga) of disputation.

शास्त्र ज्ञान के साधन

तत्रोपायाननुव्याख्यास्यामः अध्ययनम्, अध्यापनं, तद्विद्यसंभाषा चेत्युपायाः ॥ (च.वि. 8/6)

शास्त्र की दृढ़ता में तत्पर होने के लिए उपायों की व्याख्या की जाती है। अध्ययन, अध्यापन और तद्विद्यसम्भाषा ये तीन उपाय हैं।

अध्ययन-विधि

- कल्य (स्वस्थ) और कृतक्षण (सारे व्यापारों को छोड़ केवल आयुर्वेद अध्ययन के संकल्प वाले) छात्र प्रातःकाल या उपव्यूष काल (कुछ रात्रि शेष रहे) में उठकर आवश्यक शौचादि क्रिया करने के बाद स्नान, सन्ध्या, आचमन, देवता, ऋषि, गौ, ब्राह्मण, गुरु, वृद्ध, सिद्ध और आचार्यों को नमस्कार करके समतल, पवित्र स्थान में सुखपूर्वक बैठकर, अपने दोष एवं त्रुटियों के दूर करने के हेतु और दूसरे के दोष और त्रुटियों को जानने के लिए अर्थतत्त्व को भली प्रकार जानकर एकाग्रमन से आयुर्वेद सूत्रों को जिस क्रम से अध्ययन किया हो उसका उसी क्रम से बार-बार आवृत्ति (दोहरावें) करें।
- इसी प्रकार मध्याह्न, रात्रि में निरन्तर समय को व्यर्थ न बिताते हुए शास्त्रों का अभ्यास करें, यह अध्ययन की विधि है।

अध्ययनार्थ शिष्य-परीक्षा

अब इसके बाद अध्यापन विधि छात्रों को पढ़ाने की इच्छा (बुद्धि) रखने वाले आचार्य प्रारम्भ में शिष्य की ही परीक्षा करें |

जैसे-शान्तप्रकृति वाला, आर्य (श्रेष्ठ) स्वभाव वाला, अक्षुद्र (उत्तम) कार्यों को करने वाला एवं मिन्-मिन् न बोलने वाला, धैर्यसम्पन्न, अहङ्काररहित, धारण करने की उत्तम शक्ति वाला, तर्क एवं स्मरण शक्ति- सम्पन्न, उदार मन वाला, सभी इन्द्रियों से युक्त, विश्वासपात्र, शील, शौच (पवित्रता), आचार, अध्ययन में प्रेम, चतुरता एवं अनुकूलता से युक्त अध्ययन करने का अत्यन्त इच्छुक, शास्त्र के अर्थ को समझने और प्रत्यक्ष कर्म देखने के लिए एकान मन से तत्पर, लोभरहित, आलसरहित, सभी प्राणियों के हित को चाहने वाला, गुरु के प्रत्येक आज्ञाओं और उपदेशों को मानने वाला और गुरु में प्रेम रखने वाला ऐसे सभी गुण-सम्पन्न छात्र को आयुर्वेद पढ़ाने योग्य कहते हैं।

अध्यापन विधि

आचार्य की आराधना का इच्छुक, ऊपर बताये हुए गुणों से युक्त छात्र गुरु के पास आवे तो गुरु कहे कि उत्तरायण के शुक्ल पक्ष में अच्छे दिन को पुष्य, हस्त, श्रवण, अश्विनी इनमें से किसी एक नक्षत्रों के साथ कल्याणकारक भगवान् चन्द्रमा से योग होने पर कल्याणकारक, करण और मैत्र मुहूर्त में मुण्डन कराकर एक दिन पहले उपवास अर्थात् व्रत करने के बाद स्नान कर काषाय वस्त्र पहन कर, हाथ में सुगन्धित द्रव्य, समिधा (हवन करने की लकड़ी), अग्नि, घी, लेप-द्रव्य, जल के घड़े, माला, दाम (हार), दीप, सुवर्ण, हेम (सुवर्ण से बने हुए आभूषण), चाँदी, मणि, मोती, मूँगा, क्षौम-परिधि (अलसी के तन्तुओं से निर्मित वस्त्र), कुश, धान का लावा, सरसों, अक्षत और सफेद फूल जो कुछ छुट्टे फूल हों, कुछ की मालायें बनी हों, मेध्य (बुद्धिवर्धक) भक्ष्य और गंध एवं घिसा हुआ चन्दन इन सामग्रियों को लेकर तुम आओ।

तद्विद्यसंभाषापरिषद्

- संभाषा विधि-अध्ययन-अध्यापन-विधि के बाद अब सम्भाषाविधि की व्याख्या की जाती है।
- वैद्य को वैद्य के साथ ही बातचीत करनी चाहिए।
- जिस विषय का जो विद्वान् है उसे उसी विषय के विद्वान् के साथ संभाषा (वाद-विवाद करना) ज्ञान की वृद्धि और आनन्ददायिका होती है|
- यह संभाषा कुशलता भी उत्पन्न करती है, बोलने की शक्ति भी उत्पन्न करती है, यश फैलाती है और दृढ़ निश्चयात्मक बुद्धि उत्पन्न करती है|
- अत: तद्विद्य संभाषा की प्रशंसा कुशल लोग करते हैं।

संभाषा के भेद

द्विविधा तु खलु तद्विद्यसंभाषा भवति-सन्धायसंभाषा, विगृह्यसंभाषा च ||

(च.वि.8/16)

संभाषा

- **संधायसंभाषा** (Friendly discussion)
- **विगृह्यसंभाषा** (Hostile discussion)

संधाय (अनुलोम) संभाषा

- ज्ञान, विज्ञान, वचन (प्रश्न), प्रतिवचन (उत्तर) की शक्ति सम्पन्न, क्रोधरहित, जिसकी विद्या (बुद्धि) अनुपस्कृत (दूषित न) हो, अनिन्दित, विनयसम्पन्न दूसरों को अपनी विनय-नीति से अपने अनुकूल कर लेने की कला को जो जानने वाले, कष्ट को सहन करने वाले और प्रिय मधुर भाषण देने वाले व्यक्तियों के साथ संधायसंभाषा की जाती है |
- इन उपर्युक्त गुणसम्पन्न विद्वान् के साथ वार्तालाप करते हुए जो कुछ भी कहे विश्वासपूर्वक निडर होकर कहे, पूछना भी हो तो विश्वासपूर्वक निःसंकोच पूछे, विश्वस्त विपक्षी यदि कुछ पूछे तो उसे स्पष्ट एवं विशद अर्थयुक्त उत्तर दें, यह मुझे हरा देगा- यह सोचकर भयभीत नहीं होना चाहिए, विपक्षी उस विद्वान् को हराकर ज्यादा हर्ष न प्रकट करे, मैंने अमुक विद्वान् को परास्त कर दिया है ऐसी बातें दूसरों से न कहे।
- मोह (अज्ञान) वश 'एकान्तग्राही' (मैं जो कह रहा हूँ वही सत्य है इस प्रकार का आग्रह) न हो, जो विषय स्वयं अज्ञात है, या जो विषय अप्रसिद्ध हैं ऐसे विषयों का वर्णन न करे, उचित रूप में विनय के द्वारा उससे अपना पक्ष स्वीकार करावें अर्थात् अपने पक्ष का बनावे, विनय गुण के संरक्षण में सावधान रहे, इस प्रकार यह अनुलोम-संभाषा विधि है |

विगृह्य(प्रतिलोम)संभाषा

वार्तालाप के पहले अपने में या विपक्षी में विद्या-बुद्धि में कौन श्रेष्ठ है, इसके लिए जल्प (वाद-विवाद) के पूर्व जल्पान्तर की परीक्षा करनी चाहिये। जिससे बात करने वाले का गुण दोष ज्ञात हो जाय। सभा में रहने वाले सभासदों की परीक्षा कर ले, कि हमारे पक्ष के हैं या उदासीन व्यक्ति है, विद्वानों की सभा है या मूर्खों की, इन सबों की परीक्षा उचित प्रकार से कर लें क्योंकि बुद्धिमानों द्वारा की गई, उचित रूप से परीक्षा कार्य में प्रवृत्ति या निवृत्ति के समय को बताती है।

परीक्षा करते हुए श्रेष्ठ व हीन जल्पक (वाद-विवाद करने वाले व्यक्तियों) के गुणों की विशेष रूप से अच्छे और दोषयुक्त गुणों की परीक्षा करे। जैसे श्रुत (शास्त्रों का अच्छा ज्ञान), विज्ञान (विशेष रूप से शास्त्रों के सिद्धान्त और कर्माभ्यास में कुशल), धारण (वार्तालाप के प्रसंग में कही गई बातों का स्मरण) करने वाला, प्रतिभान (प्रतिभा युक्त), वचनशक्ति (वाद-विवाद करने की शक्ति से युक्त अर्थात् अपने भावों को स्पष्ट रूप से व्यक्त करने की सामर्थ्य का होना), ये इतने गुण जल्पक में होना श्रेष्ठ माना जाता है और इन आगे बताये हुए गुणों का होना दोष माना जाता है। जैसे क्रोधी होना, पांडित्य न होना, डर जाना, कही हुई बात को धारण न करना, सावधान न होना, इन दोनों प्रकार के दोष एवं गुणों की तुलना अपने में और विपक्षी में करे, कि इन अच्छे गुणों में कितने मेरे में हैं, और कितने दूसरे जल्पक में हैं। इसी तरह कितने दोष मुझमें हैं, वह कितने दूसरे में हैं, इस गुरुता- श्रेष्ठता व लघुता की तुलना उचित रूप से करनी चाहिये।विगृह्य-संभाषा सर्वदा विजय के ही दृष्टिकोण से आरम्भ की जाती है। इसके लिये जब तक अपने शत्रु के गुण-दोष की परीक्षा कर यह नहीं जान लिया जाता है, कि किन-किन अंशों में वह श्रेष्ठ है व किन-किन अंशों में दुर्बल है, तब तक विगृह्य-संभाषा प्रारम्भ नहीं की जाती।

वादमर्यादा का लक्षण

तत्रेदं वादमर्यादालक्षणं भवति-इदं वाच्यम्, इदमवाच्यम्, एवं पराजितो भवतीति ||

(च.वि.8/26)

वादमर्यादा का लक्षण है - वाद प्रारम्भ होने पर उसमें यह कहना चाहिए, यह नहीं कहना चाहिए, इस प्रकार वह पराजित होता है।

* इमानि तु खलु पदानि भिषग्वादमार्गज्ञानार्थमधिगम्यानि भवन्ति ||

(च.वि. 8/27)

वादमार्ग के 44 पद

वादः	दृष्टान्त	प्रयोजनं	वाक्यप्रशंसा
द्रव्यं	उपनयः	सव्यभिचार	छलम्
गुणाः	निगमनम्	जिज्ञासा	अहेतुः
कर्म	उत्तरं	व्यवसायः	अतीतकालम्
सामन्यं	सिद्धान्तः	अर्थप्राप्ति	उपालम्भः
विशेषः	शब्दः	संभवः	परिहारः
समवायः	प्रत्यक्षम्	अनुयोज्यम	प्रतिज्ञाहानि
प्रतिज्ञा	अनुमानम्	अननुयोज्यम्	अभ्यनुज्ञा
स्थापना	ऐतिह्म्	अनुयोगः	हेत्वन्तरम्
प्रतिष्ठापना	औपम्यं	प्रत्यनुयोगः	अर्थान्तरं
हेतुः	संशयः	वाक्यदोषः	निग्रहस्थानं

वादः

वादमार्ग की निरुक्ति एवं परिभाषा :-

- वाद- वद् – व्यक्तायां वाचि, वद- सन्देशवचने

तत्र वादो नाम स यत् परेण सह शास्त्रपूर्वकं विगृह्य कथयति ।। (च.वि. 8/27)

वाद उसे कहा जाता है जो दूसरे के साथ शास्त्र के अनुसार अपने-अपने पक्ष को कहते हुए विगृह्य-सम्भाषा में वार्तालाप किया जाता है।

वह वाद संक्षेप में दो प्रकार का होता है- १. जल्प
२. वितण्डा

जल्प :- तत्र पक्षाश्रितयोर्वचनं जल्पः।।
अपने-अपने पक्षों का उद्घाटन युक्तिपूर्वक करना जल्प है।

वितण्डा :- जल्पविपर्ययो वितण्डा ।।
जल्प के विपरीत वितण्डा होता है।

द्रव्यं-गुणाः-कर्म-सामान्यं-विशेषः-समवायः

द्रव्यं	यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायि यत् तद् द्रव्यं ॥
गुणाः	समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः ॥
कर्म	संयोगे च विभागे च कारणं द्रव्यमाश्रितम् कर्तव्यस्य क्रिया कर्म कर्म नान्यदपेक्षते ॥
सामान्यं	सर्वदा सर्वभावानां सामान्यं वृद्धिकारणम्।सामान्यमेकत्वकरं तुल्यार्थता हि सामान्यं ॥
विशेषः	ह्रासहेतुर्विशेषश्च विशेषस्तु पृथक्त्वकृत। विशेषस्तु विपर्ययः ॥
समवायः	समवायोऽपृथग्भावो भूम्यादीनां गुणैर्मतः। स नित्यो यत्र हि द्रव्यं न तत्रानियतो गुणः ॥

प्रतिज्ञा-स्थापना-प्रतिष्ठापना-हेतुः - दृष्टान्तः-उपनयः-निगमनं-उत्तरं

प्रतिज्ञा	प्रतिज्ञा नाम साध्यवचनं।
स्थापना	स्थापना नाम तस्या एव प्रतिज्ञाया हेतुदृष्टान्तोपनयनिगमनैः स्थापना। पूर्वं हि प्रतिज्ञा, पश्चात् स्थापना, किं ह्यप्रतिज्ञातं स्थापयिष्यति।
प्रतिष्ठापना	प्रतिष्ठापना नाम या तस्या एव परप्रतिज्ञाया विपरीतार्थस्थापना।
हेतुः	हेतुर्नामोपलब्धिकारणं; तत् प्रत्यक्षम्, अनुमानम्, ऐतिह्यम्, औपम्यमिति, एभिर्हेतुभिर्यदुपलभ्यते तत् तत्त्वम्।
दृष्टान्तः	दृष्टान्तो नाम यत्र मूर्खविदुषां बुद्धिसाम्यं, यो वर्ण्यं वर्णयति।
उपनयः	दृष्टान्तः - यथाऽऽकाशमिति: उपनयः- यथा चाकृतकमाकाशं, दृष्टान्तः- यथा घट इति, उपनयो- यथा घट ऐन्द्रियकः स चानित्यः, तथा चायमिति।
निगमनं	निगमनं- तस्मादनित्य इति ॥
उत्तरं	उत्तरं नाम साधर्म्योपदिष्टे हेतौ वैधर्म्यवचनं वैधर्म्योपदिष्टे वा हेतौ साधर्म्यवचनम्।

सिद्धान्तः

सिद्धान्तो नाम स यः परीक्षकैर्बहुविधं परीक्ष्य हेतुभिश्च साधयित्वा स्थाप्यते निर्णयः॥

(च.वि. 8/37)

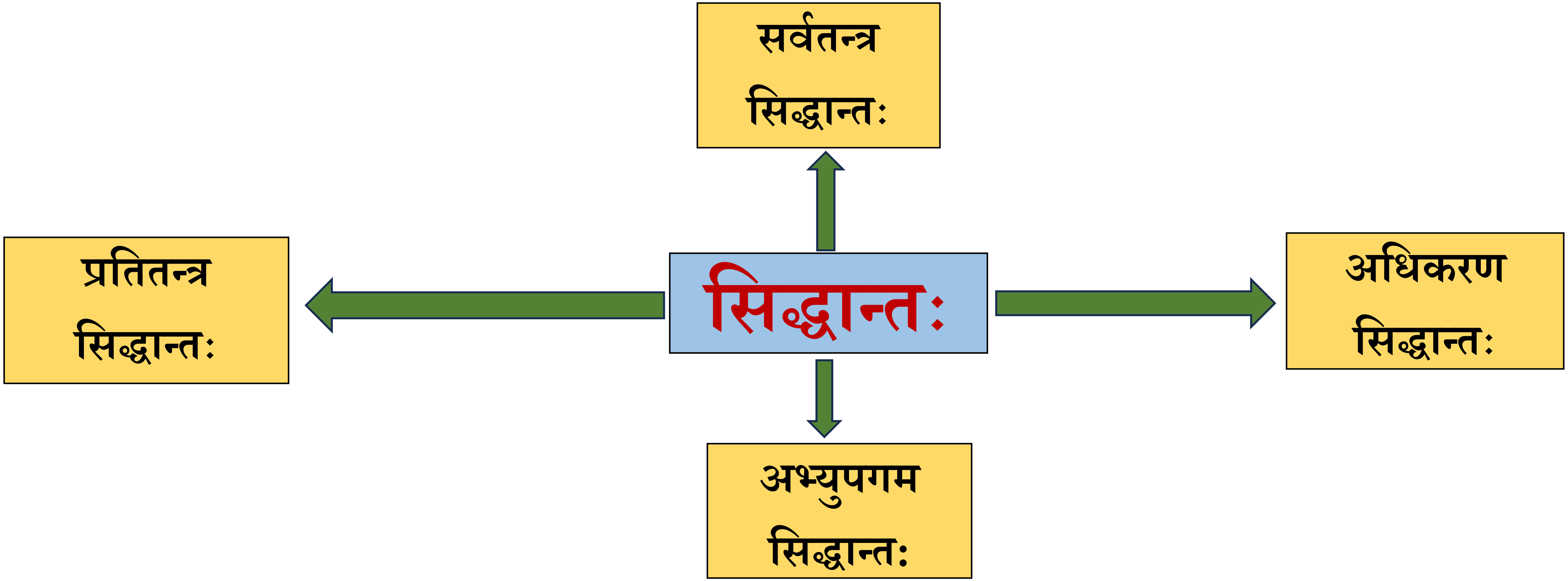

शब्द:

शब्दो नाम वर्णसमाम्नाय:।।

(च.वि. 8/38)

शब्द उसे कहते है, जो वर्ण को मिलाने वाला समूह होता है।

अर्थात् अक्षर के समूह को शब्द कहते हैं।

वह चार प्रकार का होता है :- १. दृष्टार्थ

२. अदृष्टार्थ

३. सत्य

४. अनृत (झूठ)

दृष्टार्थ	तत्र दृष्टार्थो नाम-त्रिभिर्हेतुभिर्दोषाः प्रकुप्यन्ति, षड्भिरुपक्रमैश्च प्रशाम्यन्ति, सति श्रोत्रादिसद्भावे शब्दादिग्रहणमिति।
अदृष्टार्थ	अदृष्टार्थः पुनः-अस्ति प्रेत्यभावः, अस्ति मोक्ष इति।
सत्य	सत्यो नाम-यथार्थभूतः; सन्त्यायुर्वेदोपदेशाः, सन्ति सिद्ध्युपायाः साध्यानां व्याधीनां, सन्त्यारम्भफलानीति ।
अनृत	सत्यविपर्ययश्चानृतः।

प्रत्यक्षम्, अनुमानम, ऐतिह्यम, औपभ्यं

प्रत्यक्षं	प्रत्यक्षं नाम तद्यदात्मना चेन्द्रियैश्च स्वयमुपलभ्यते; तत्रात्मप्रत्यक्षाः सुखदुःखेच्छाद्वेषादयः, शब्दादयस्त्विन्द्रियप्रत्यक्षाः ॥
अनुमानं	अनुमानं नाम तर्को युक्त्यपेक्षः; यथा-अग्निं जरणशक्त्या, बलं व्यायामशक्त्या, श्रोत्रादीनि शब्दादिग्रहणेनेत्येवमादि ॥
ऐतिह्यं	ऐतिह्यं नामाप्तोपदेशो वेदादिः ॥
औपम्यं	औपम्यं नाम यदन्येनान्यस्य सादृश्यमधिकृत्य प्रकाशनं यथा-दण्डेन दण्डकस्य, धनुषा धनुःस्तम्भस्य, इष्वासेनाऽऽरोग्यदस्येति ॥

संशयः, प्रयोजनं, सव्यभिचारं, जिज्ञासा, व्यवसायः, अर्थप्राप्ति, सम्भवः

संशयः	संशयो नाम सन्देहलक्षणानुसन्दिग्धेष्वर्थेष्वनिश्चयः ॥
प्रयोजनं :	प्रयोजनं नाम यदर्थमारभ्यन्त आरम्भाः ॥
सव्यभिचारं	सव्यभिचारं नाम यद्व्यभिचरणं ॥
जिज्ञासा	जिज्ञासा नाम परीक्षा ॥
व्यवसायः	व्यवसायो नाम निश्चयः ॥
अर्थप्राप्ति	अर्थप्राप्तिर्नाम यत्रैकेनार्थेनोक्तेनापरस्यार्थस्यानुक्तस्यापि सिद्धिः ॥
सम्भवः	यो यतः संभवति स तस्य संभवः ॥

अनुयोज्यं, अननुयोज्यं, अनुयोगो, प्रत्यनुयोगः

अनुयोज्यं	अनुयोज्यं नाम यद्वाक्यं वाक्यदोषयुक्तं तत्। सामान्यतो व्याहृतेष्वर्थेषु वा विशेषग्रहणार्थं यद्वाक्यं तदप्यनुयोज्यं ॥
अननुयोज्यं	अननुयोज्यं नामातो विपर्ययेण ॥
अनुयोगो	अनुयोगो नाम स यत् तद्विद्यानां तद्विद्यैरेव सार्धं तन्त्रे तन्त्रैकदेशे वा प्रश्नः प्रश्नैकदेशो वा ज्ञानविज्ञानवचनप्रतिवचनपरीक्षार्थमादिश्यते ॥
प्रत्यनुयोगः	प्रत्यनुयोगो नामानुयोगस्यानुयोगः ॥

वाक्यदोषः

वाक्यदोषो नाम यथा खल्वस्मिन्नर्थे न्यूनम्, अधिकम्, अनर्थकम्, अपार्थकं, विरुद्धं चेति; एतानि ह्यन्तरेण न प्रकृतोऽर्थः प्रणशयेत् ।।

(च.वि. 8/54)

कोई वाक्य किसी अर्थ में न्यून, अधिक, अनर्थक, असम्बद्ध अर्थ वाला या विरुद्ध हो तो इन दोषों से युक्त वाक्य को दोषयुक्त वाक्य कहते हैं। इन न्यूनता आदि दोषों के बिना वाक्य का स्वाभाविक अर्थ नष्ट नहीं होता है।

वाक्यदोषः	DEFINITION
न्यूनम्	प्रतिज्ञाहेतूदाहरणोपनयनिगमनानामन्यतमेनापि न्यूनं न्यूनं भवति; यद्वा बहूपदिष्टहेतुकमेकेन हेतुना साध्यते तच्च न्यूनम्।
अधिकम्	अधिकं नाम यन्यूनविपरीतं - 2 types - अर्थपुनरुक्तं, शब्दपुनरुक्तं
अनर्थकम्	अनर्थकं नाम यद्वचनमक्षरग्राममात्रमेव स्यात् पञ्चवर्गवन्न चार्थतो गृह्यते।
अपार्थकं	अपार्थकं नाम यदर्थवच्च परस्परेणासंयुज्यमानार्थकं; यथा- चक्र-न(त)क्र-वंश-वज्र- निशाकरा इति।
विरुद्धं	विरुद्धं नाम यद् दृष्टान्तसिद्धान्तसमयैर्विरुद्धः।

वाक्यप्रशंसा

वाक्यप्रशंसा नाम यथा खल्वस्मिन्नर्थे त्वन्यूनम्, अनधिकम्, अर्थवत्, अनपार्थकम्, अविरुद्धम्, अधिगतपदार्थं चेति यत्तद्वाक्यमननुयोज्यमिति प्रशस्यते ।।

(च.वि. 8/55)

वाक्य प्रशंसा उसे कहते हैं जो वाक्य दोषयुक्त न हो, जैसे इस अर्थ में यह वाक्य न्यून नहीं है, अधिक नहीं है, अनर्थक नहीं है, अपार्थक नहीं है, विरुद्ध नहीं है और ज्ञात है पद का अर्थ जिसका इस प्रकार जो वाक्य होता है वह अननुयोज्य होता है, अतः श्रेष्ठ वाक्य माना जाता है।

छलं, अहेतु, अतीतकालं, उपालम्भो

छलं	छलं नाम परिशठमर्थाभासमनर्थकं वाग्वस्तुमात्रमेव।तद् द्विविधं- वाक्छलं, सामान्यच्छलं च।
अहेतु	अहेतुर्नाम प्रकरणसमः, संशयसमः, वर्ण्यसमश्चेति।
अतीतकालं	अतीतकालं नाम यत् पूर्वं वाच्यं तत् पश्चादुच्यते, तत् कालातीतत्वादग्राह्यं भवतीति।
उपालम्भो	उपालम्भो नाम हेतोर्दोषवचनं।

परिहार, प्रतिज्ञाहानिः, अभ्यनुज्ञा, हेत्वन्तरं, अर्थान्तरं

परिहार	परिहारो नाम तस्यैव दोषवचनस्य परिहरणं।
प्रतिज्ञाहानिः	प्रतिज्ञाहानिर्नाम सा पूर्वपरिगृहीतां प्रतिज्ञां पर्यनुयुक्तो यत् परित्यजति।
अभ्यनुज्ञा	अभ्यनुज्ञा नाम सा य इष्टानिष्टाभ्युपगमः।
हेत्वन्तरं	हेत्वन्तरं नाम प्रकृतहेतौ वाच्ये यद्विकृतहेतुमाह।
अर्थान्तरं	अर्थान्तरं नामैकस्मिन् वक्तव्येऽपरं यदाह।

निग्रहस्थानं

निग्रहस्थानं नाम पराजयप्राप्तिः,तच्च त्रिरभिहितस्य वाक्यस्यापरिज्ञानं परिषदि विज्ञानहत्यां, यद्वा अननुयोज्यस्यानुयोगोऽनुयोज्यस्य चाननुयोगः।

प्रतिज्ञाहानिः, अभ्यनुज्ञा, कालातीतवचनम्, अहेतुः, न्यूनम्, अधिकं, व्यर्थम्, अनर्थकं, पुनरुक्तं, विरुद्धं, हेत्वन्तरम्, अर्थान्तरं च निग्रहस्थानम्।। (च.वि. 8/65)

वाद के स्थल

●वादस्तु खलु भिषजां प्रवर्तमानो प्रवर्तेतायुर्वेद एव, नान्यत्र।	वैद्यों का वाद-विवाद प्रारम्भ हो तो वह आयुर्वेद शास्त्र में ही प्रारम्भ करे अन्य शास्त्रों में न करे।
●अत्र हि वाक्यप्रतिवाक्यविस्तरा: केवलाक्षोपपत्तय: सर्वाधिकरणेषु ता: सर्वा: समवेक्ष्यावेक्ष्य समवेक्ष्यावेक्ष्य सर्वं वाक्यं ब्रूयात्।	यहाँ : अधिकरणों (आयुर्वेद के सब विषयों) में वाक्य एवं प्रतिवाक्य के विस्तार को सम्पूर्ण युक्तियों के साथ कहा गया है, उन सभी युक्तिकों को ठीक-ठीक सोच-समझकर वाक्यों को कहना चाहिए।

●नाप्रकृत - कमशास्त्रमपरीक्षितमसाधकमाकुलमव्यापकं वा।	अप्राकृतिक, शास्त्र-ज्ञान से शून्य, बिना परीक्षा किये, हेतु (कारण), शून्य वाक्य, बुद्धि को व्याकुल करने वाला, और अर्थ बताने में असमर्थ वाक्य को न बोले।
●सर्वं च हेतुमद्ब्रूयात्।	जो कुछ बोले वह सब हेतुयुक्त बोले
●हेतुमन्तो ह्यकलुषाः सर्व एव वादविग्रहाश्चिकित्सिते कारणभूताः, प्रशस्तबुद्धिवर्धकत्वात्: सर्वारम्भसिद्धि ह्यावहत्यनुपहता बुद्धिः।	हेतुयुक्त सभी वाद, विग्रह, अकलुषित (दोषरहित) होते हैं। वे चिकित्सा शास्त्र की सिद्धि में कारण होते हैं, क्योंकि अच्छे प्रकार से बुद्धि को बढ़ाने वाले होते हैं। अच्छी शुद्ध बुद्धि सभी कर्मों में सिद्धि को देने वाली होती है।

सम्भाषा

रोगभिषग्जितीयविमानाध्याय: विमान अध्याय में इसकी व्याख्या क्यों की गई है?

- विमान स्थान के पूर्वोक्त सात अध्यायों में रस, दोष, द्रव्य और विकार आदि के मान-ज्ञान का निरूपण अनेक प्रकार से किया गया है।
- अच्छे वैद्यों को उपयुक्त ज्ञान इसी से हो सकता है, परन्तु जब तक अच्छे वैद्य की परिभाषा तथा आचार्यों के सूत्र रूप में उपदेश समझने का ढंग आदि का वर्णन जिज्ञासुओं की जानकारी के लिए न किया जाय तब तक उसका पूर्णज्ञान नहीं हो सकता। अत: इस आठवें रोगभिषग्जितीय नामक विमान की व्याख्या अभीष्ट हुई।

- रोगों की चिकित्सा का अधिकार कर यह अध्याय कहा गया है अतः इसका रोगभिषग्जितीय नाम रखा गया है।
- यह चिकित्सा का ज्ञान भी अच्छे वैद्य होने पर ही निर्भर है इसलिए सर्वप्रथम वैद्य बनने की इच्छा रखने वाले पुरुष के कर्तव्य का संङ्केत निम्नलिखित पदों द्वारा किया गया है।

वाद का महत्व

- नये विचार/शोध कार्य की स्थापना।
- विशेषज्ञों के साथ चर्चा खोज को बढ़ावा देता है और ज्ञान की उन्नति करता है।
- वाद करने से प्रतिभागी की संज्ञानात्मक, आलोचनात्मक सोच और विश्लेषणात्मक सोच के विकास में मदद मिलेगी।

- स्वस्थ चर्चा से ज्ञान में वृद्धि होती है, आत्मज्ञान बढ़ता है और प्रतियोगिता की तैयारी में मदद मिलती है।
- विषय की तीक्ष्णता एवं स्पष्टता बढ़ती है।
- शब्दावली बढ़ती है और व्याख्या शक्ति भी बढ़ती है।

44 वादों का वर्गीकरण

- **अभिव्यक्ति का माध्यम** - शब्द
- **वाद का कारण**- संशय, प्रयोजन, जिज्ञासा
- **वाद के विषय** - द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष
- **प्रस्तुति की विधि** - प्रतिज्ञा, स्थापना, प्रतिष्ठापन, हेतु, दृष्टांत, उपनय, निगमन, उत्तर

- **कथन को सिद्ध करने के लिए प्रयुक्त उपकरण-** सिद्धांत, प्रत्यक्ष, अनुमान, ऐतिह्य, औपम्य
- **सहायक शब्द -** अर्थप्राप्ति, संभव
- **निश्चित निष्कर्ष-** व्यवसाय
- **अनिश्चित निष्कर्ष -** सव्यभिचार
- **प्रस्तुति पर प्रश्न -** अनुयोग, प्रत्यानुयोग, छल, परिहार, उपलम्भ

- वाद की विफलता (पराजय) के कारण- अनुयोज्य, वाक्यदोष, अहेतु, अतीतकाल, प्रतिज्ञाहानि, हेत्वन्तर, अर्थान्तर
- वाद की सफलता के कारण- अननुयोज्य, वाक्यप्रशंसा, अभ्यनुज्ञा

APPLICATION OF VAADMARGA IN RESEARCH

- **Design of research work -** संशय, जिज्ञासा, व्यवसाय, प्रयोजन, सम्भव
- **Area and Measure -** द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय
- **Title of Research work –** प्रतिज्ञा
- **Aims and Objectives –** हेतु
- **Well known established work, any instances, example –** दृष्टान्त

- **Comparative study – उपनय**
- **Final conclusion - निगमन**
- **Validation of research work/establishment of universal truth, universal theory, restricted theory, implied theory, hypothetical theory – सिद्धान्त**
- **Establishment of theory through justification – स्थापना**
- **Counter argument against the proposition set – प्रतिष्ठापना**
- **Tools/ instrument of research - शब्द, प्रत्यक्ष, अनुमान, ऐतिह्य, औपम्य, अर्थप्राप्ति**
- **Demonstration for approval – अननुयोज्य (Infallible statement**

अनुयोग (Compilation of partial quiery)

प्रत्यनुयोग (Repeated compilation of quiery)

परिहार (Correction and compilation)

वाक्यप्रशंसा (Syntactical excellence)

- **Defects in demonstration -** सव्यभिचार (Doubtful statement)

अनुयोज्य (Defective/ questionable statement)

वाक्यदोष (Defect in statement)

छल (Verbal and general casuistry)

अहेतु (Defective observation)

अतीतकाल (Delayed statement)

उपलम्भ (Defective causality)

अभ्यनुज्ञा (Admission of argument)
हेत्वन्तर (Imperfect reason is stated)
अर्थान्तर (Irrelevant statement)
उत्तर (Rejoinder)

- **Rejection or failure of work -** प्रतिज्ञाहानि (Failure to prove the synopsis)
  निग्रहस्थान (Rejection from approval/ unproved)

DISCUSSION

Charakokta 44 Vaada Marga Padaas can be understood significantly by -:

(a) Concept of the logical structure of scientific investigation:

It comprises and begins with pratigya or hypothesis 1) Vada, 2) Dravya, 3) Guna, 4) Karma, 5) Samanya, 6) Vishesha, 7) Samavaya, 8) Pratigya, 9) Sthapana, 10) Pratisthapana, 11) Hetu, 12) Drishtanta, 13) Upanaya, 14) Nigamana.

Materials and Methods present in the Vadamarga Padaas:

Materials :-Acharya charaka mentioned the materials that are employed in the Sambhasha vidhi among the Vadamargapadaas

as - Dravya ,viz, Panchamahabhutas, Atma, Mana, kaala , and Disha (Nava Dravyani) Gunas, Karma,Samanya, Vishesha ,and Samavaya.

Here the 15th Uttara, among the 44 -Charakokta Vada Marga Padaas is just said to say "to proceed further".

Here the 16th Siddhanta among the 44 -Charakokta Vada Marga Padaas is used to support to the proposed statements.

Here the 17th Shabda - among the 44 Charakokta Vada Marga Padaas is related to the basic and the grammatical aspect of the word (Shabdha).

Methods: **Acharya charaka suggested 4 methods of Pariksha Vidhi (investigation methods) as an authentic methods to be employed in the Sambhasha Vidhi –**

18) Pratyaksha, 19) Anumana, 20) Aitihya, 21) Aupamya.

(b) Concept of Intrusion of intellectuals or Psychological interventions in scientific investigation:

Beginning with doubt (samshaya), viz. - 22)Samashaya, 23) Prayojana, 24) Savyabhichara, 25) Jigyasa, 26) Vyavasaya, 27) Arthaprapti, 28) Sambhava.

(c) Concept of the Skills (abilities) of theorising and fallacies :

Beginning with ambiguous statement (anuyojya), the 29th – 39thVadamarga padaas ,viz. - (29) Anuyojya, 30) Ananuyojya,

31) Anuyoga, 32) Pratyanuyoga, 33) Vakyadosha, 34) Vakyaprashansa, 35) Cchala, 36) Ahetu , 37) Ateetakala, 38) Upalambha, 39) Parihara.

(d) Vada Marga padas defines the defeat or a Nervous distress, wherein the contestant loses his self confidence :

40) Pratigyahani, 41) Abhyanugya, 42) Hetwantara, 43) Arthantara and 44) Nigrahasthana.

A QUESTION ARISES….

What is the reason (hetu) and role (Prayojana) to include the methods of debate in the syllabus of Ayurveda (Medical Sciences) which is the field especially concerned to the Rogas, their Chikitsas??

The answer would be -

(I) Unless the criteria for competence of the Chikitsaka are evolved, there is likely to cause Bhrama and the science would remain stagnant without proper communication.

(ii) As indicated, competent Bhishak should posses an insight, tolerance and ability to share, understand and express scientific

knowledge. Whether the debate is oral or written (is a contingent matter).

(iii) The important remains is that it is absolutely necessary for a Samudaya of Prikshakas and scientists having difference of views and opinions.

(iv) The stress on methodical debate is further, indicative of a rationalist, argumentative diplomacy which is normally needed to prevent against dogma (Traditional blind beliefs).

CONCLUSION

The Vadamarga (terms of Debate) have been systemized from the angle of research methodology as proposed for standard presentation of research fact for proving. Right from standards of presentation to that of design of research (Samsaya-doubt, Jigyasa- enquiry, Vyavasaya-Determination / Decision, Prayojana-Object for which various measures have adopted, Sambhava-Source), incorporating the subsequent aspects involved in it (research), are dealt specifically to suit for research and presentation of such other works. This explores and gives scope for utilization in various fields of research.The systemic classification gives a design about (analysis) the power of expression and it proves to be supportive for teaching learning methods.

REFERENCES

1. Charakasamhita: Vimanasthana, Rogabhishagajitiyam, edited by Pt.Kashinath Shastri and Dr. Gorakha Natha Chaturvedi, Reprint edition, Chaukhamba Orientalia, Varanasi.
2. International Journal of Current ResearchVol. 8, Issue, 08, pp.35817-35821, August, 2016 by Dr. Vaidya, S. M. and Dr. Kulkarni Pratibha, Department of Samhita and Siddhanta, SDM College of Ayurveda, Hassan.
3. A SIGNIFICANT EMPHASIS ON CHARAKOKTA VADA MARGA PADAS by Dr.Jyotilaxmi Patavari , Dr.Renuka Tenalli, Dr.Jyoti.P.Baragi, Dr.R.A.Desmukh, Dr. Sachin Bagali, PG Scholar, Professor & HOD, Assosiate Professor, Assistant Professor, Lecturer.Department of PG Studies in Samhita Siddhanta, B.L.D.E.A's A.V.Samiti's Ayurveda Mahavidyalaya, Vijayapur, Karnataka, India.

THANK
YOU!
Roola Akbarian